



॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—<http://www.facebook.com/groups/aryayouth/>

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली- 110007, आई. एफ. एस. कोड SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9810117464 पर एस.एम.एस कर दें या 9868051444 पर googlepay कर दें।

—अनिल आर्य

वर्ष-42 अंक-14 पौष-2082 दयानन्दाब्द 201 16 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 2025 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.12.2025, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoo.com Website : www.aryayuvakparishad.com

आर्य समाज नोएडा का वार्षिकोत्सव सौल्लास सम्पन्न

संस्कार जीवन का आधार है —डॉ. अशोक कुमार चौहान
राष्ट्रवादी शक्तियों को मजबूत करें —राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य



एमिटी शिक्षण संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष डा. अशोक चौहान दीप प्रज्ज्वलित करते हुए। द्वितीय चित्र में अभिनन्दन।



डा. अशोक चौहान सम्बोधित करते हुए।

कार्यक्रम में अपार जनसमूह।

नोएडा, रविवार 14 दिसम्बर 2025, आर्य समाज सेक्टर-33, नोएडा का 5 दिवसीय वार्षिकोत्सव सौल्लास सम्पन्न हुआ। समारोह में नोएडा, गाजियाबाद, हापुड़ मेरठ व दिल्ली से आर्य जून सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. जयेन्द्र आचार्य ने यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में किया। मुख्य अतिथि डा. अशोक कुमार चौहान (संस्थापक अध्यक्ष एमिटी शिक्षण संस्थान ने कहा कि संस्कारों का जीवन में अत्यधिक महत्व है। संस्कार विहीन व्यक्ति पशु के समान है। संस्कारी व्यक्ति समाज में हर ओर सम्मान पाता है। आर्य समाज नई पीढ़ी को चरित्रवान और संस्कारी बनाने का कार्य करता है। ऐसे नव युवकों के कारण ही भारत महा शक्ति बनेगा। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि आज राष्ट्रवादी और राष्ट्र विरोधी दो विचार धाराएं देश में चल रही हैं। आर्य समाज देश का रक्षक है। इसलिए आज उसे राष्ट्र को मजबूत बनाने का काम करना है सही शिक्षा पद्धति का चुनाव हमें करना है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को अच्छा इंसान बनाना है। समारोह में डॉ. वेदपाल शास्त्री (मेरठ), संध्या शर्मा, कर्ण शर्मा, डा.डी के गर्ग, बहिन गायत्री मीना, सतपाल पहलवान आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ. जयेन्द्र आचार्य ने किया। इस अवसर पर मधु भसीन, बहिन गायत्री मीना, कैप्टन अशोक गुलाटी, अनमोल चौहान, राज सरदाना यज्ञ वीर चौहान, चंद्र प्रभा अरोड़ा, रविन्द्र सेठ, विजेन्द्र कठपाललिया आदि उपस्थित थे।



मकर संक्रान्ति पर्व 14 जनवरी, 2026 पर-

मकर संक्रान्ति पर्व क्या है और इसे कब, क्यों व कैसे मनाते हैं

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

मनुष्य सभी आवश्यक विषयों का ज्ञान प्राप्त करना चाहता है। जो ज्ञान उसे अधिक महत्वपूर्ण लगता है उसे स्मरण रखते हुए उससे लाभ प्राप्त करने में उसकी प्रवृत्ति बनती है। हमारे अनेक पर्व हमें उनके महत्व से परिचित कराते हैं जिन्हें मनाकर हम उससे यथोचित लाभ लेने का प्रयास करते हैं। मकर संक्रान्ति का पर्व भी ऐसा ही एक पर्व है जिसके यथार्थस्वरूप से परिचित होकर हमें ज्ञात होता है कि इस पर्व से “उत्तरायण” 6 माह के काल का आरम्भ होता है। इससे हमारे दिन के समय में वृद्धि और रात्रि के अन्धकार की अवधि में निरन्तर कमी आती जाती है। महाभारत के दिनों में उत्तरायण में ही हमारे क्षत्रिय व अन्य लोग अपने प्राण त्यागने को महत्वपूर्ण मानते थे। अजेय योद्धा भीष्म पितामह के जीवन का उदाहरण है कि जब उनका समस्त शरीर अर्जुन के बाणों से बिंध गया था और उनकी मृत्यु निकट ही थी, तब उन्होंने अपने ब्रह्मचर्य व तप के बल से अपने प्राणों व आत्मा की ऊर्ध्व गति के लिए उत्तरायण के आगमन तक रोक रखा था। इसका कारण यही था कि उत्तरायण में प्राण त्यागने पर मनुष्य की उत्तम गति व मोक्ष प्राप्ति की सम्भावना होती है। उत्तरायण के प्रथम दिन मकर संक्रान्ति के दिन ही यह पर्व अज्ञात दीर्घ अवधि से मनाया जा रहा है। इससे हमें आकाश में होने वाली ज्योतिषीय घटना का ज्ञान भी होता है। यदि यह पर्व न मनाया जाता होता तो जन सामान्य मकर संक्रान्ति की घटना से शायद परिचित न होता। अतः मकर संक्रान्ति मनाते हुए हमें मकर राशि और सूर्य के उसमें प्रविष्ट होने सहित इस पर्व से दिन के समय में वृद्धि व रात्रि के समय में कमी होने की वास्तविकता को समझना चाहिये। इसका हमारे जीवन में महत्व होता है। यदि मकर संक्रान्ति के दिन व इसके बाद भी रात्रि के समय में वृद्धि व दिन के समय में कमी का क्रम पूर्ववत् जारी रहता तो इससे मनुष्य जीवन के अस्तित्व में बाधाएँ व समस्याएँ आती। अतः इस लाभकारी परिवर्तन के दिन को हमें प्रसन्नतापूर्वक ज्ञान से पूर्ण परम्परा को अपनी भावनाओं में स्थिर कर मनाना चाहिये। इस लेख में हम मकर संक्रान्ति विषयक जानकारी प्रस्तुत कर रहे हैं।

हमारी पृथिवी सूर्य के चारों ओर भ्रमण करते हुए परिक्रमा करती है। इसी से रात्रि, दिन, सप्ताह, महीने व वर्ष होते हैं। पृथिवी को सूर्य की एक परिक्रमा व चक्र पूरा करने में एक वर्ष का समय लगता है। इसे सौर वर्ष कहा जाता है। हमारी पृथिवी सूर्य की परिक्रमा एक वर्तुलाकार परिधि में करती है। इससे जो वृत्त बनता है उसे ‘क्रान्तिवृत्त’ कहते हैं। हमारे ज्योतिष के विद्वानों ने इस क्रान्तिवृत्त पर 12 भाग कल्पित किये हुए हैं। इन 12 भागों के नाम उन्होंने आकाशीय नक्षत्र पुंजों की कुछ पशुओं से मिलती जुलती आकृतियों के अनुरूप, जिन्हें राशियाँ कहते हैं, दिये हैं। यह आकृतियाँ हैं 1— मेष, 2— वृष, 3— मिथुन, 4— कर्क, 5— सिंह, 6— कन्या, 7— तुला, 8— वृश्चिक, 9— धनु, 10— मकर, 11—कुम्भ तथा 12 मीन। इन आकृतियों के समान नक्षत्र पुंजों की आकृतियाँ होने के कारण ही इन राशियों को यह नाम दिये गये हैं। सूर्य का भ्रमण व परिक्रमा करते हुए जब पृथिवी एक राशि से दूसरी राशि में प्रविष्ट होती है तो उसे ‘संक्रान्ति’ नाम से सम्बोधित किया जाता है। संसार में पृथिवी के एक राशि से दूसरी राशि में संचरण व प्रविष्ट होने को सूर्य का संक्रमण कहने लगे हैं। 6 माह तक सूर्य क्रान्तिवृत्त के उत्तर में उदय होता है और 6 माह तक क्रान्तिवृत्त के दक्षिण भाग में। इस प्रत्येक 6 मास की अवधि का नाम अयन कहलाता है। सूर्य के उत्तर की ओर उदय की अवधि को ‘उत्तरायण’ और दक्षिण दिशा की ओर उदय की अवधि को ‘दक्षिणायन’ कहते हैं। उत्तरायण काल में सूर्य उत्तर की ओर से निकलता हुआ दीखता है। उत्तरायण की अवधि में दिन का समय निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होता जाता है और रात्रि का समय दिन प्रति दिन कम होता जाता है।

दक्षिणायन काल में सूर्य दक्षिण की ओर से उदय होता हुआ दिखाई देता है। इसमें रात्रि का समय बढ़ता और दिन का समय घटता जाता है। दक्षिणायन काल में सूर्य जब मकर राशि में प्रवेश करता है तो इसे उत्तरायण और जब कर्क राशि में संक्रान्ति करता है तो उसे दक्षिणायन के नाम से जाना जाता है। उत्तरायण में सूर्य का प्रकाश हमारी पृथिवी पर अधिक मात्रा में प्राप्त होने से इससे अनेक प्रकार से लाभ होते हैं जिससे इसका महत्व दक्षिणायन से अधिक है। उत्तरायण का आरम्भ मकर संक्रान्ति के दिन से होने से इस दिन को महत्वपूर्ण मानकर पर्व मानने की परम्परा प्राचीन काल से चल रही है। मकर संक्रान्ति के दिन से ही इसके बाद के दिन बड़े होने आरम्भ होते थे परन्तु आजकल इस दिन से लगभग 22 दिन पहले ही दिन बड़े होने लगते हैं। अब से 88 वर्ष पूर्व विक्रमी सम्वत् 1994 में पाया गया था कि मकर संक्रान्ति से 22 दिन

पूर्व धनु राशि के 7 अंश 24 कला पर ‘उत्तरायण’ होता है। इस परिवर्तन को 1350 वर्ष लगे हैं। ऐसा होने पर भी मकर संक्रान्ति के दिन ही उत्तरायण को आरम्भ मान लिया जाता है। इसका कारण प्राचीन काल से मनायी जाने वाली इस उत्तरायण पर्व प्रथा को सुरक्षित रखना प्रतीत होता है। इससे हमें यह ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में हमारे पूर्वज मकर संक्रान्ति के दिन उत्तरायण का पर्व मनाते थे और उत्तरायण उसी दिन होता भी था। यह कारण व महत्व इस उत्तरायण पर्व अथवा मकर संक्रान्ति पर्व को मनाने का है।

मकर संक्रान्ति का पर्व मध्य जनवरी मास में मनाया जाता है। आगामी वर्ष 2026 में यह पर्व बुधवार दिनांक 14 जनवरी, 2026 को मनाया जायेगा। इस अवसर पर शीत अपने यौवन पर होता है। इस समय जंगल, वन, पर्वत सहित नगरों व ग्रामों आदि सभी स्थानों में शीत का आतंक छाया हुआ होता है। ऐसे समय में मनुष्य के हाथ पैर भी सिकुड़ जाते हैं। मकर संक्रान्ति से पूर्व दिनों की यह स्थिति होती है कि सूर्य के उदय होते ही वह अस्तांचल के गमन की तैयारियाँ आरम्भ कर देते हैं। ऐसा लगता था कि दिन रात्रि में समा रहा है। रात्रि इतनी लम्बी हो जाती है कि कठिनाई से बीतती थी। मकर संक्रान्ति के आने पर रात्रि के वृद्धि अभियान पर विराम लगता है और इसके बाद से वह छोटी होती जाती है व दिन बड़े होने लगते हैं। दिन के समय में वृद्धि होने से मकर संक्रान्ति के दिवस से आरम्भ उत्तरायण काल को देवयान कहा गया है। इसी काल में महाभारत काल व उसके बाद के ज्ञानी लोग स्वशरीर त्याग की इच्छा करते थे। वह ऐसा मानते थे कि इस समय देह त्यागने से उन की आत्मा सूर्य लोक में होकर प्रकाश मार्ग से प्रयाण करेगी। आजीवन ब्रह्मचारी रहे भीष्म पितामह ने इसी उत्तरायण के आगमन तक शर-शय्या पर शयन करते हुए प्राणोत्क्रमण की प्रतीक्षा की थी। ऐसे प्रशस्त समय पर कोई पर्व बनने से कैसे वंचित रह सकता था। इसी कारण से आर्य जाति के प्राचीन आचार्यों ने मकर संक्रान्ति, सूर्य की उत्तरायण संक्रमण की तिथि, को उत्तरायण या मकर संक्रान्ति पर्व निर्धारित किया था।

इस पर्व को मनाते हुए तिल के अनेक प्रकार के पकवान बनाकर उनका सेवन किया जाता है। वैद्यों के अनुसार शीत का निवारण करने में खाद्य पदार्थों में तिल का विशेष स्थान है। मकर संक्रान्ति के दिन भारत के सब प्रान्तों में तिल और गुड़ या खांड के लड्डू बनाकर दान किये जाते हैं। इन लड्डूओं को इष्ट मित्रों में भी बांटा जाता है। महाराष्ट्र में इस दिन तिलों का ‘तीलगूल’ नामक हलुवा बांटने की प्रथा है। सौभाग्यवती स्त्रियाँ तथा कन्याएं अपनी सखी-सहेलियों से मिलकर उन को हल्दी, रोली, तिल और गुड़ भेंट करती हैं। प्राचीन ग्रीक लोग भी वधू-वर को सन्तान वृद्धि के निमित्त तिलों का पक्वान्न बांटते थे। इस से ज्ञात होता है कि तिलों का प्रयोग प्राचीनकाल में विशेष गुणकारक माना जाता रहा है। प्राचीन रोमन लोगों में मकर संक्रान्ति के दिन अंजीर, खजूर और शहद अपने इष्ट मित्रों को भेंट देने की रीति थी। यह भी मकर संक्रान्ति पर्व की वैश्विकता एवं प्राचीनता का परिचायक है।

हमने मकर संक्रान्ति पर्व से जुड़ी घटना एवं इसके उपलब्ध स्वरूप पर प्रकाश डाला है। हमने इस लेख की सामग्री श्री पं. भवानी प्रसाद लिखित आर्य पर्व पद्धति पुस्तक से ली है। मकर संक्रान्ति वैदिक व आर्य पर्व है। इससे हमारी प्राचीन संस्कृति में पर्वों को प्राकृतिक, ज्योतिषीय व ऋतु परिवर्तन आदि घटनाओं से जोड़कर मानने की परम्परा का ज्ञान होता है। आज भी मकर संक्रान्ति का मनाना प्रासंगिक है। हमें ज्ञात होता है कि अब रात्रि छोटी व दिन बड़े होने आरम्भ हो जायेंगे। शीत का जो आतंक होता है वह भी मकर संक्रान्ति पर्व से निरन्तर घटता जाता है और फाल्गुन के महीने में शीण व समाप्त सा हो जाता है। चैत्र का महीना तो अत्यन्त सुहावना होता है। इस महीने में होली का पर्व मनाया जाता है। हमें मकर संक्रान्ति पर्व पर अपने घरों में वृहद यज्ञ करने चाहिये और उसमें हवन सामग्री में तिल मिलाकर उससे आहुतियाँ देनी चाहियें। तिल के सभी प्रकार के पकवान बनाकर उसका कुछ दिनों तक सेवन करना चाहिये। वेद प्रचार प्रसार से जुड़ी गुरुकुल आदि संस्थाओं को दान देना चाहिये। आर्यसमाजों व सार्वजनिक स्थानों पर पर्व मनाने के लिये सामूहिक कार्यक्रम भी आयोजित किये जा सकते हैं। ऐसा करके हम मकर संक्रान्ति पर्व की परम्परा को जारी रखने में सफल होंगे। यह प्रथा चलती रहे, लोग इसके विभिन्न पहलुओं से परिचित होते रहें तथा तिल आदि के पकवानों का सेवन कर शीतकाल में शीत से उत्पन्न रोगों से बचे रहें, यही इस पर्व को मनाने की उपयोगिता प्रतीत होती है।

आर्य समाज नोएडा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न



परिषद् अध्यक्ष अनिल आर्य का अभिनन्दन करते बहिन गायत्री मीना, कैप्टन अशोक गुलाटी व मधु भसीन

आर्य समाज कालका जी वार्षिकोत्सव



रविवार 14 दिसम्बर 2025 आर्य समाज कालका जी नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव में संबोधित करते हुए अनिल आर्य मंत्री अनिल अरोड़ा ने कुशल संचालन किया। रमेश गाड़ी, राम चन्द्र कपूर, अरुण कपूर राकेश भटनागर शशि कांत प्रवीण रेलन, वेद प्रभा वरेजा आदि उपस्थित थे।

गौतम नगर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न



रविवार 7 दिसम्बर 2025 गुरुकुल गौतम नगर नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव 17 नवम्बर से 7 दिसम्बर 2025 तक स्वामी प्रणवनन्द जी के सानिध्य में सम्पन्न हुआ चित्र में अनिल आर्य संबोधित करते हुए।

अमर कालोनी का वार्षिकोत्सव



रविवार 7 दिसम्बर 2025 आर्य समाज अमर कॉलोनी नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हो गया। चित्र में अनिल आर्य संबोधित करते हुए साथ में प्रधान जितेन्द्र डावर जी, मंत्री ओम प्रकाश छाबड़ा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

डालेश त्यागी का अभिनन्दन



आर्य समाज विकास पुरी बाहरी रिंग रोड दिल्ली के प्रधान श्री डालेश त्यागी के जन्मोत्सव पर अभिनन्दन करते अनिल आर्य आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री रेणु त्यागी व अजय चौधरी।

ओ३म्

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्

के तत्वावधान में
गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक, स्वतन्त्रता सेनानी, समाज सुधारक

99 वां स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

मंगलवार, 23 दिसम्बर 2025, प्रातः 11:00 बजे
स्थान : 24 मदर टरेसा क्रीसेंट मार्ग, नई दिल्ली

मुख्य अतिथि
श्री मनोज तिवारी जी (संसद सदस्य)
अध्यक्षता- **श्रीमती अंजु मेहरोत्रा जी**
(प्रधानाचार्या, कालका पब्लिक स्कूल अलखनंदा)
यज्ञ ब्रह्मा- **आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी**

गरिमामयी उपस्थिति

श्री आनन्द चौहान	ठाकुर विक्रम सिंह	डॉ. डी.के. गर्ग
श्रीमती ममता शर्मा	श्री यशपाल आर्य	श्री सुशील सलवान
श्रीमती गायत्री मीना	कै. अशोक गुलाटी	श्री रविदेव गुप्ता
श्री राजेश मेहन्दिरता	श्री गुरुचरण घई	श्री प्रकाशवीर शास्त्री
श्री आर.पी. सूरी	श्री आदर्श आहुजा	श्री देवेन्द्र कुमार
श्री प्रेमकुमार सचदेवा	श्री संजीव बजाज	श्री नरेन्द्र आर्य सुमन
श्री जितेन्द्र डावर	श्री अमरसिंह सहरावत	श्री सुशील बाली
श्री डालेश त्यागी	श्री अमरनाथ बत्रा	श्री रविन्द्र आर्य
श्रीमती राजरानी अग्रवाल	श्री विजय पाहुजा	श्री सुरेन्द्र गुप्ता
श्रीमती राधा भारद्वाज	श्री धर्मपाल परमार	श्री राजेन्द्र वर्मा
श्री शान्ता तनेजा	श्रीमती आरती खुराना	श्री महेन्द्र जेतली
श्री यशोवीर आर्य	श्रीमती विद्योत्तमा झा	श्री नेत्रपाल आर्य
श्री महेश शर्मा	श्री सुन्दर शास्त्री	श्री मनोज मान
श्री सहदेव नांगिया	श्री एच.एन. मिथरानी	श्रीमती किरण सेठी
श्रीमती अर्चना पुष्करना	श्री सोहनलाल आर्य	श्रीमती सुनीता बुग्गा
श्रीमती कृष्णा पाहुजा	डॉ. कर्नल विपिन खेड़ा	श्री गोपाल आर्य
श्री आदर्श सलूजा	श्री भोपाल सिंह आर्य	श्री अनिल अरोड़ा

आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं

निवेदक

अनिल आर्य	सुरेश आर्य	धर्मपाल आर्य	महेन्द्र भाई
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय मंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री
रामकुमार आर्य	देवेन्द्र भगत/प्रवीण आर्य	ओम सपरा	वेदप्रकाश आर्य
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय मंत्री	स्वागताध्यक्ष	राष्ट्रीय मंत्री
स्वागत समिति:	शिवम मिश्रा, माधव सिंह, अरुण आर्य, रोहित कुमार, वरुण आर्य		

Live on Youtube "AryaYuvakParishad"



उनकी तुरबत पर नहीं एक भी दिया,
जिनके खूँ से जले थे चिरागे वतन।

आज महकते हैं मकबरे उनके,
जिन्होंने बेचे थे शहीदों के कफन।।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की केन्द्र सरकार से माँग

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन

नया बाजार दिल्ली को राष्ट्रीय स्मारक घोषित करो

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा 2020 से 751वां वेबिनार सम्पन्न

‘शरद ऋतु के वरदान’ विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

स्वास्थ्य रक्षक है शरद ऋतु —आचार्य श्रुति सेतिया

मंगलवार 02 दिसंबर 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में ‘शरद ऋतु के वरदान’ पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 751 वेबिनार था। वैदिक विदुषी श्रुति सेतिया ने कहा कि वर्ष में कुल 6 ऋतुएं होती हैं और इन ऋतुओं के अनुसार निर्देशित आहार विहार को अपनाने वाला ही सदा स्वस्थ रहता है। आयुर्वेद में इन 6 ऋतुओं के लिए अलग अलग आहार विहार का वर्णन मिलता है, जिसे अपना कर ही आरोग्य और आनंद की प्राप्ति संभव है। अश्विन कार्तिक मास की अवधि शरद ऋतु कहलाती है। शरद ऋतु के आहार विहार तथा रोगोपचार की चर्चा के क्रम में आयुर्वेद में यह भी बताया गया है कि यह काल शक्ति संचय, एवं रोग मुक्ति का काल है। सूर्य की गरम किरणों के प्रभाव से शरीर में संचित पित्त शरद ऋतु में प्रकुपित हो जाता है तथा रक्त भी पित्त के प्रकुपित होने से दूषित हो जाता है, ऐसी स्थिति में आहार विहार संबंधी नियमों का पालन आरोग्य लाभ के लिए अति आवश्यक है। शरद ऋतु में प्रायः ऐसा भोजन लेना चाहिए जो पित्त नाशक का कार्य करता हो। शरद ऋतु में हरड़ का प्रयोग विशेष रूप से लाभप्रद है। शरद ऋतु के आगमन से पूरे वातावरण में एक विशेष तरह की निर्मलता का संचार होता है। यह ऋतु मन और शरीर दोनों को संतुलित करने वाली मानी गई है। शरद ऋतु में पित्त प्रकोप को नियंत्रित करने के लिए शोधन उपक्रम अत्यंत प्रभावी होते हैं। शरद ऋतु में यह अवसर होता है कि हम उचित आहार विहार, शोधन और संतुलित जीवन शैली से अपने शरीर को शुद्ध करें और रोगों से सुरक्षित रखें। यह ऋतु न केवल आनंद और उत्सव का प्रतीक है बल्कि स्वास्थ्य और आयुर्वेदिक साधना का स्वर्णिम अवसर भी है। यजुर्वेद में इसे दीर्घायु और प्रचुरता से जिए जाने वाले जीवन के रूप में वर्णित किया गया है। **मुझे सौ शरद ऋतु जीने दो, मुझे सौ शरद ऋतु देखने दो।** मुख्य अतिथि कृष्णा पाहुजा व अध्यक्ष कुसुम भण्डारी ने भी शरद ऋतु के लाभ बताए। परिषद् अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका कौशल्या अरोड़ा शोभा बत्रा संतोष धर जनक अरोड़ा सुमित्रा गुप्ता कमला हंस आदि के मधुर भजन हुए।



‘विश्व शांति कैसे सम्भव’ विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

बाहर की शान्ति से पहले अंदर की शान्ति आवश्यक —अतुल सहगल

मंगलवार 9 दिसंबर 2025 केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में ‘विश्व शांति कैसे सम्भव’ विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 750 वेबिनार था। वैदिक विद्वान अतुल सहगल ने विषय की भूमिका प्रस्तुत करते हुए, वैश्विक समाज के परिपेक्ष में इस विषय की महत्ता को सामने रखा स शांति पाठ मन्त्र, जो कि यजुर्वेद के 36 वें अध्याय का 17वां मन्त्र है, की चर्चा करते हुए वक्ता ने इस मन्त्र का सम्पूर्ण, शुद्ध अर्थ श्रोताओं के समक्ष रखा स शांति शब्द का अपूर्ण अर्थ ही सामान्य जन प्रायः समझते हैं। वक्ता ने वैदिक शांति का उल्लेख करते हुए कहा कि वैदिक शांति में नीरवता, शुद्धता, संतुलन और सामंजस्य— ये चारों आ जाते हैं स शांति का सम्पूर्ण और विस्तृत अर्थ यही है। वक्ता ने फिर विश्व शांति के विषय पर लौटते हुए यह बताया कि विश्व शांति उस स्थिति को कहा जाता है जब देशों में परस्पर अच्छे सम्बन्ध हों और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मित्रता और सौहार्द का वातावरण हो। आज विश्व में अशांति है, भय का वातावरण है और यह समस्या बढ़ ही रही है। वक्ता ने उन देशों के नाम लिए जो या तो आज भीषण युद्ध कर रहे हैं या परोक्ष रूप से युद्ध कर रहे हैं अथवा युद्ध के कगार पर खड़े हैं। इसके कारणों पर वक्ता ने प्रकाश डाला। विश्व इतिहास के पन्ने पलटते हुए वक्ता ने प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध की बात कही और League of Nations o UNO संस्थाओं की चर्चा की स इन संस्थाओं के होते हुए भी बड़े युद्ध टल न सके, विश्व शांति तो बड़े दूर की बात है। वक्ता ने कहा कि मौलिक स्तर पर सनातन वैदिक धर्म से दूर हटना ही इन सब समस्याओं का जनक है। व्यक्तिगत स्तर पर लोभ, क्रोध व अभिमान प्रवृत्तियां मानव को शत्रुता, वैमानस्य और झगड़े की ओर ले के जाती हैं और युद्ध इसी का परिणाम हैं। मनुष्य में तमोगुण और राजोगुण के बढ़ने से क्रोध, अज्ञान, अभिमान इत्यादि दुर्गुण बढ़ते हैं। व्यक्ति इन दुर्गुणों को दूर करे तो उसके अंतर्मन में शांति स्थापित होती है। आंतरिक शांति हो तो बाहरी शांति भी हो जाती है। वास्तव में आंतरिक शांति और बाहरी शांति एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। एक के बिना दूसरा संभव नहीं वक्ता ने फिर विस्तार से उन नीतियों और उपायों की चर्चा की जिनसे विश्व शांति स्थापित हो सकती है। इनमें वैश्विक स्तर पर एक UNO की विकल्प संस्था का गठन होना चाहिए। वह सनातन वैदिक धर्म के आधार पर राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक नियम बनाये जो हर राष्ट्र पर लागू हों स धर्म ही सुख और शांति का आधार है और वैदिक धर्म के मार्ग पर ही राष्ट्र चल कार्य विश्व शांति की सुनहरी परिकल्पना को साकार कर सकते हैं। आर्य समाज को इस कार्य में विशेष और अग्रणी भूमिका निभानी होगी। शांति है तो सुख, समृद्धि है स शांति है तो सर्वांगीण विकास है स शांति के बिना जीवन नरकीय है। कार्यक्रम के अध्यक्ष आर्य नेता राजेश मेहन्दीरत्ता ने कहा कि वेदों के मार्ग पर चल कर ही शान्ति सम्भव है। परिषद् अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया और प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका कौशल्या अरोड़ा जनक अरोड़ा प्रवीणा ठक्कर सरला बजाज सन्तोष आदि के मधुर भजन हुए।



जहां होता है भरपूर काम और प्रभु का गुणगान आर्य युवक परिषद् है उसका नाम